धौलखण्ड का इतिहास और उसकी, 1857 की क्रांति में भूमिका

(1554 -1862)

डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

Scanned with CamScanner

धंधेरखन्ड का इतिहास और उसकी, 1857 की क्रांति में भूमिका (1554-1862)

डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

एम. ए. पी-एच.डी. (इतिहास), बी. लिब. एस. सी.
ढेंगुला गली कुन्जनपुरा दतिया (म.प्र.)

राधा पब्लिकेशन्स
नई दिल्ली-110002

Scanned with CamScanner

© लेखक

पहला संस्करण : 2018

ISBN : 978-93-86439-38-3

ISBN 93-86439-38-7

9 789386 439383

राधा पब्लिकेशन्स

4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,

नई दिल्ली-110002

फोनः 23247003, 23254306

Email : radhapublications@rediffmail.com

Website : www.radhapublications.com

श्री नितिन गर्ग द्वारा राधा पब्लिकेशन्स के लिए प्रकाशित तथा
एशियन ऑफसेट प्रिंटर्स, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

Dhanderkhand Ka Itihas Aur Uski, 1857 Ki Kranti Main Bhumika

By Ram Swaroop Dhengula

Scanned with CamScanner

अनुक्रम

आभार के शब्द 5

अध्याय एक—भूमिका 1

1. विषय प्रवेश

2. शाहाबाद क्षेत्र के धंधेरे-चौहान

3. तीन कुरी की ठकुरास

4. भौगोलिक - स्थिति और इतिहास

5. समकालीन राजनैतिक स्थिति; 6. उपसंहार

अध्याय दो — अजमेर-रणथम्भौर के चौहान, धंधेरे-ठाकुरों का उद्‌गम और मुकुटमणि चौहान 19

1. संक्षेप में चौहान-राजपूतों का इतिहास

2. चौहान राजपूत और अजमेर

3. पृथ्वीराज चौहान तृतीय

4. पृथ्वीराज चौहान के बाद अजमेर

5. रणथम्भौर के चौहान

6. रणथम्भौर के हमीरदेव चौहान (1282-1301)

7. हम्मीरदेव चौहान के उत्तराधिकारी और धंधेरे-चौहानों का उद्‌गम

8. धंधेरे-चौहानों के उद्‌गम के अन्य मत

9. चौहान-राजपूतों के बुन्देलाओं से विवाह संबन्ध

10. सोहनपाल बुन्देला और मुकुटमणि; 11. उपसंहार

अध्याय तीन — मुकुटमणि धंधेरा और उसका काल 36

1. मुकुटमणि धंधेरा

2. शेरशाह सूरी और मुकुटमणि-धंधेरा

3. कचबाड़ा

Scanned with CamScanner

4. कछवाहा का स्थान निर्धारण
5. मेदनीराय चौहान
6. जगन्नमणि देव धंधेरा
7. जगन्नमणिदेव के उत्तराधिकारी; 8. उपसंहार

अध्याय चार – इन्द्रमणि धंधेरा और उसका काल 50
1. इंद्रमणि धंधेरा
2. इन्द्रमणि धंधेरा और सहरा-क्षेत्र
3. सहरा क्षेत्र की स्थिति
4. सहरा क्षेत्र की पड़ताल
5. इन्द्रमणि धंधेरा का अन्त
6. इन्द्रमणि धंधेरा का मूल्यांकन; 7. उपसंहार

अध्याय पांच – धंधेरे-ठाकुरों का बुन्देलखण्ड के बुन्देलाओं से सम्पर्क का विकास काल 64
1. धंधेरे ठाकुर और छत्रसाल बुन्देला
2. सिरसी का देवीसिंह धंधेरा और उसका काल
3. खांडेराव रायसौ में देवीसिंह धंधेरा के उल्लेख
4. देवीसिंह धंधेरे का अवसान
5. देवीसिंह के बाद सिरसी
6. पिरोना एवं पट्टी-कुमर्रा के धंधेरे और दतिया राज्य
7. बुन्देलखण्ड के पश्चिमी भागों के धंधेरों के ठिकाने
8. धंधेरे ठाकुरों के शेष ठिकाने; 9. उपसंहार

अध्याय छै – धंधेरखन्ड के भागों में मराठों और अंग्रेजों का प्रवेश 85
1. धंधेरखन्ड और मराठे
2. झांसी बुन्देलखन्ड में मराठा शक्ति का प्रमुख केन्द्र बना
3. मालवा-राजपूताने के धंधेरखन्ड के भागों में मराठे
4. महादजी सिंधिया युग और मालवा-राजपूताने के धंधेरी भाग और अंग्रेज
5. महादजी सिंधिया उत्तर भारत की राजनीति का केन्द्र, और उसका अवसान
6. महादजी सिंधिया के उत्तराधिकारी
7. बुन्देलखन्ड में मराठों का प्रवेश
8. बुन्देलखन्ड और अंग्रेज; 9. उपसंहार

अध्याय सात – बुन्देलखण्ड में अंग्रेज विरोधी संघर्ष की शुरूआत 100
1. भूमिका
2. बुन्देलखण्ड का प्रथम विद्रोही, चिरगांव का बख्तसिंह बुन्देला
(अ) विद्रोहों में बुढ़वा मंगल उत्सव का महत्व
(ब) बख्तसिंह का विद्रोह
3. जैतपुर का विद्रोही पारीछत बुन्देला
4. पारीछत कटक, समकालीन जनभावना का प्रतिबिम्ब
5. पारीछत की विद्रोही रानी राजो
6. नारहट-सागर परिक्षेत्र के विद्रोह और धंधेरे
7. नारहट का विद्रोही मधुकरशाह बुन्देला
8. मधुकरशाह के बाद नारहट के भूभाग
9. धंधेरे ठाकुरों का ठिकाना नानकपुर; 10. उपसंहार

अध्याय आठ – समकालीन झांसी राज्य और धंधेरखण्ड की ठकुरास 129
1. समकालीन झांसी राज्य और अंग्रेज
2. अंग्रेजी शासन की छाया में झांसी
3. गंगाधरराव के शासन में झांसी
4. समकाल में धंधेरखण्ड क्षेत्र की स्थिति
5. झांसी के गंगाधरराव के समय में धंधेरखन्ड की ठकुरास को लिखे गये पत्र
6. गंगाधरराव के निधन के बाद, झांसी की स्थिति; 7. उपसंहार

अध्याय नौ – रानी लक्ष्मीबाई का काल और धंधेरखन्ड की ठकुरास 145
1. रानी लक्ष्मीबाई और अंग्रेज
2. झांसी में विद्रोह, धंधेरखण्ड क्षेत्र और रानी
3. रानी का शासन और धंधेरखन्ड की ठकुरास
4. रानी के अल्प शासन काल के संकट और धंधेरी ठकुरास
5. रायसौ के उल्लेख और धंधेरखण्ड
6. अंग्रेजों का झांसी पर आक्रमण और रानी का प्रतिरोध
7. रानी के समर्थन में धंधेरखन्ड की ठकुरास का बलिदान
8. धंधेरखण्ड के ठिकानेदार और रानी
9. इलाहबाद के पंडा द्वारा दी गई धंधेरों की जानकारी
10. रानी लक्ष्मीबाई का बलिदान; 11. उपसंहार

Scanned with CamScanner

अध्याय दस – क्रान्तिकाल में चंदेरी, नानकपुर के धंधेरे और तात्याटोपे 179

1. चंदेरी-बानपुर और नानकपुर के धंधेरे

2. क्रान्तिकाल के बाद नानकपुर के धंधेरे

3. तात्याटोपे का परिचय

4. तात्याटोपे और धंधेरखन्ड की ठकुरास

5. रानी की शहादत के बाद तात्याटोपे का संघर्ष और धंधेरखण्ड

6. तात्याटोपे को फांसी और धंधेखण्ड का जनमानस; 7. उपसंहार

अध्याय ग्यारह – क्रांतिकाल के बाद अंग्रेजी सरकार की नीतियां और धंधेरखण्ड पर उनका प्रभाव 197

1. भूमिका

2. कम्पनी सरकार का अन्त और बुन्देलखन्ड की चेतना

3. क्रान्तिकाल के बाद धंधेरखन्ड की स्थिति

4. क्रान्ति के बाद अंग्रेजों की आर्थिक नीति और धंधेरखण्ड

5. सिंधिया शासन में धंधेरखन्ड

6. धंधेरखन्ड के भागों में सामंतवाद की स्थिति

7. सन् 1862 ई0 की स्थिति में धंधेरखन्ड की समीक्षा; 8. उपसंहार

अध्यायों के संदर्भ की पाद टिप्पणीं 221

परिशिष्ट – प्रस्तावित शोध काल के इतिहास के अध्ययन का मूल्यांकन 243

संदर्भ-ग्रन्थ सूची 247

Scanned with CamScanner

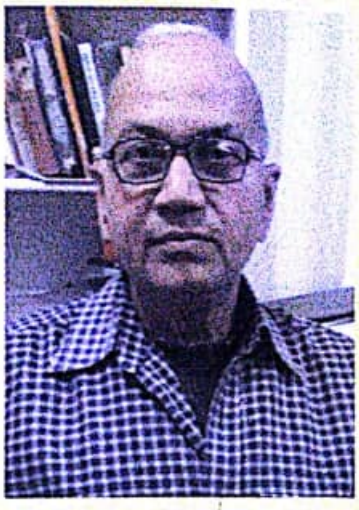

डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला का जन्म, दतिया म.प्र. में 25, अक्टूबर सन् 1950 में हुआ था। आपके पिता स्व. श्री हितकिशोर ढेंगुला एवं स्व. माताश्री भगवती देवी थीं। आपके पूर्वज ऐतिहासिक स्थान एरच, झांसी उ.प्र. से दतिया राज्य में आठ पीढ़ी पूर्व आये थे। आपकी शिक्षा दतिया एवं ग्वालियर में हुई थी, एम. ए., इतिहास और लायब्रेरी साइंस की डिग्री प्राप्त करने के बाद पी-एच.डी. इतिहास में झांसी के सुप्रसिद्ध, ख्याति प्राप्त विद्वान स्व. श्री भगवानदास गुप्त के निर्देशन में बु.वि. झांसी से 1982 में प्राप्त की थी। आप म.प्र. शासन की शासकीय सेवा में लायब्रेरियन के पद पर रहते हुये सन् 2010 में सेवानिवृत हो चुके हैं।

सन् 1962 से आपने कवितायें लिखना प्रारंभ कर दिया था, इसके बाद सामाजिक विषयों पर लेख भी लिखे, जो स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में लगातार छपे। इतिहास में पी-एच.डी. उपाधि के दौरान वह शोध सामग्री संकलन करने के लिये देश के प्रसिद्धश्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ 1979 में गया था। इसके बाद लेखक ने उस संस्थान की इतिहास की सभी सेमीनारों में शोध-पत्र पढ़े, ये शोध पत्र प्रायः उनके छप चुके हैं। इसी समय से लेखक ने विभिन्न संस्थाओं व महाविद्यालयों में अनेकों शोध-पत्र पढ़े हैं, इनमें से अधिकांश प्रकाशित हैं। इसके अलावा लेखक ने म.प्र. की आदिवासी लोककला परिषद, हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोज विश्वविद्यालय भोपाल के लिये इतिहास विषय के विविध पक्षों पर लिखा है, जो प्रकाशित हो चुका है।

उसके प्रकाशित इतिहास के ग्रंथों में, बुन्देलखंड का राजनैतिक सांस्कृतिक अनुशीलन, कानपुर से, बुन्देलखंड के परमार, हि.ग.अका. भोपाल से, कल्याण कृत लक्ष्मीबाई रायसौ, ऐतिहासिक विवेचन और परम्परा, स्वराज सं. संस्कृति विभाग भोपाल से, कहानी संग्रह, '[illegible]चे लायब्रेरियनजी', कानपुर से प्रकाशित हो चुके हैं। लेखक को संस्कृति विभाग स्वराज सं. भोपा[illegible] 2008 में फैलोशिप दतिया जिले के 1857 पर काम करने के लिये मिली थी, उसका यह शोध[illegible] अभी अप्रकाशित है और हैलीकुट्टीजान कहानी संग्रह भी अप्रकाशित है। प्रस्तुत प्रकाशि[illegible] शोध ग्रंथ "धंधेरखन्ड का इतिहास और उसकी 1857 की क्रान्ति में भूमिका" विषय प[illegible] कार्य करने के लिये लेखक को श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ के माध्यम से आई.सी[illegible] आर.दिल्ली द्वारा अनुदान प्राप्त हुआ था। बुन्देलखन्ड मालवा व राजस्थान के शोध इति[illegible] लिये यह ग्रंथ मील का पत्थर साबित होगा।

RADHA PUBLICATIONS

4231/1, Ansari Road, Daryaganj
New Delhi-110002
Phones : 23247003, 23254306
website. radhapublications.com
Email : radhapublications@rediffmail.com

₹750

ISBN 93-86[illegible]-7

Scanned with CamScanner